सम्पूर्ण पवित्रता से ही सम्पूर्णता

ब्रह्माकुमारीझ

प्रस्तुति

ब्र. कु. प्रफुलचन्द्र

सम्पूर्ण पवित्रता से ही सम्पूर्णता और सम्पन्नता

क्यों की.....

- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वास्तविक आधार है.....
- Purity ब्राह्मणों की Reality है तो Royalty भी है.....
- Purity ब्राह्मण जीवनी की personality एवं perfection है.....
- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है .....
- पवित्रता ही ब्राह्मणों की समृध्धि है- Purity is prosperity.....
- पवित्रता ही बाप के स्नेह का अनुभव करने का श्रेष्ठ माध्यम है....
- पवित्रता ही सेवा में सफलता का आधार है.....
- देवी-देवताओं के सम्पूर्ण एवं संपन्न जीवन का आधार भी पवित्रता ही है .....

Continue.....

- पवित्र संकल्प ब्राह्मण जीवन का भोजन है .....
- पवित्र दृष्टि ब्राह्मण जीवनकी आँखों की रोशनी है .....
- पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धंधा है .....
- पवित्र सम्बन्ध और संपर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है .....
- पवित्रता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है .....
- २१ जन्मो की प्रालब्ध का आधार – फाउंडेशन पवित्रता है .....
- आत्मा अर्थात बच्चे और बाप के मिलनका आधार पवित्र बुध्धि है .....
- सर्व संगम युगी प्राप्ति और सबसे महान बनने का आधार पवित्रता है .....
- पुज्य पद पाने का आधार भी पवित्रता है .....

६-१-८२

पवित्रता-Purity ही रॉयल्टी है और पर्सनालिटी है

❖प्योरिटी की परख हरेक की रूहानी रोयल्टी और पर्सनालिटी से होती है |

❖रूहानी रोयल्टी और पर्सनालिटी वाली आत्माओं की परख

(१) उनके बोल महावाक्य-godly version होते है, जिन्हें सुनने वाले Golden Age के अदिकारी बन जाते है| उनके बोल स्नेह के और समर्थ होते है |

(२) उनके संपर्क में जो भी आएगा उनको शीतलता, शांति, फरिस्ते स्वरूप की और वरदातापन की अनुभूति होगी

(३) उनकी रूहानी नजर से लोग निहाल हो जायेंगे| वह सर्व आत्माओं का उलाहना पूर्ण कर सकेंगे | ५-२-७५

जितना हम honest-ईमानदार होंगे

इतना ही हम Holiest-पवित्र होंगे

ऑनेस्ट अर्थात

- सच्चाई-Reality: बाप से, अपने आप से और अन्य से सच्चा बन कर रहेना
- जो बाप से प्राप्त खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगाए | अगर मनमत और परमत प्रमाण समय को, वाणी को, कर्म को, श्वांस को, संकल्प को व्यर्थ में गवाते है तो ईमानदार नहीं कहेंगे|
- सर्व के प्रति सदा शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना होंगी
- सदा संकल्प और बोल वा कर्म द्वारा सदा निमित्त और निर्माण होंगे
- हर कदम में समर्थ स्थिति का अनुभव हो, हर संकल्प में बाप के साथ का और सहयोग के हाथ का अनुभव हो, हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव हो
- जैसे बाप जो है जैसा है बाप बच्चो के आगे प्रत्यक्ष है वैसे बच्चे जो है जैसे है वैसे ही बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करे | यह अनेक प्रकार के बोझ को समाप्त करने की सरल युक्ति है
- उसकी हर प्रवृत्ति का आधार ज्ञान, श्रीमत और अनुभव होगा न की बाते

२५-६-७७

सम्पूर्ण पवित्रता ही विशेष आत्माओं का श्रृंगार है

- विद्या की देवी सरस्वती आप कि सम्पूर्ण पवित्रताकी यादगार है| उस का आसन हंस है जो पवित्रता की ही निशानी है
- हंस की विशेषता है (१) Right की परख करने वाला knowledgeful (२) मोती चुगनेवाला दिखाया है अर्थात शुध्ध संकल्पों का भोजन बुध्धि से ग्रहण करने वाला (३) हंस को सफ़ेद दिखाया है जो स्वच्छता और पवित्रता का प्रतिक है
- सरस्वती को ज्ञान की देवी एवं विणावादिनी के रुपमे दिखाया गया है जो हमें सन्देश देता है की ज्ञान की समज और धारण से ही हमें सम्पूर्ण पवित्र बनाना है
- संकल्प में भी अपवित्रता का अंश मात्र न हो ऐसा श्रृंगार हमारा निरंतर रहे| इस समय का श्रृंगार जन्म जन्मान्तर के लिए अविनाशी बन जाता है
- जो पवित्रता के श्रींगार से सजा हुआ है वो टेंशन से मुक्त होगा लेकिन सेकण्ड सेकण्ड एटेंशन जरुर रखेगा
- उसमे साथी और साक्षीपन की विशेषता होगी और ड्रामा के हर पार्ट को बजाते हुए कल्याण की भावना रखेगा |

९-५-७७

नैनो में पवित्रता की जलक हो

मुख पर पवित्रता जी मुस्कराहट हो

वाणी में पवित्रता की मधुरता और निर्मलता हो

हाथ-पाँव से किये हर कर्म से पवित्रता प्रत्यक्ष हो

सम्पूर्ण पवित्रता कैसे सिध्ध होगी

- सिर्क ब्रह्मचारी बनना सम्पूर्ण पवित्रता नहीं है लेकिन ब्रह्मचारी के साथ साथ ब्रह्मा आचार्य और शिवा आचार्य भी चाहिए
- स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खंडित होता है वा किसी आत्मा प्रति इर्षा या नफ़रत का भाव पैदा होता है वा आवेश और क्रोध वश कोई कर्म होता है या बोल निकलते है वा व्यवहार होता है तो उसको पवित्रता का खंडन माना जाएगा
- आलस्य और अलबेलापन भी एक प्रकार की अपवित्रता ही है
- पवित्रता माना मन, वचन, कर्म और स्वप्न में भी पवित्रता
- जहां सर्व शक्तिमान बाप है वहा अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती, इसीलिए सदा बाप और आप युगल रूप में रहो, सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है

- पवित्रता को हठ से नहीं अपनाओ महेनत नहीं करो | पवित्रता अपनी निजी वस्तु है पराई नहीं है| पराई चीज अपनाना मुश्किल लगता है निजी वस्तु नहीं |
- अपना स्वरूप पवित्र है, अपना स्वधर्म पवित्र है, स्वदेश पवित्र देश है, स्वराज्य पवित्र राज्य है , यादगार परम पवित्र पूज्य है, कर्मेन्द्रियो का अनादी स्वभाव पवित्र सुकर्म है | बस यही सदा स्मृतिमे रखो और स्वमान में रहो की

  में परम पवित्र आत्मा हूँ ६-१-८२
- स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने, करने में फुलस्टॉप लगा कर परिवर्तन करो
- व्यर्थ संकल्प का कारण है अभिमान और अपमान इन दोनों को न्योछावर कर दिया तो बाप समान बनने मे कोई मुश्किल नहीं| संकल्पों को शुध्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ
- स्व के ऊपर कंट्रोल करने की पावर को और बढाओ
- सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध, संपर्क में तिन बिंदु का महत्व हर समय धारण करना
- पवित्रता का व्रत प्रतिज्ञा के रूप में दृढ़ता से लेना है २३-१२-९३

ॐ शांति

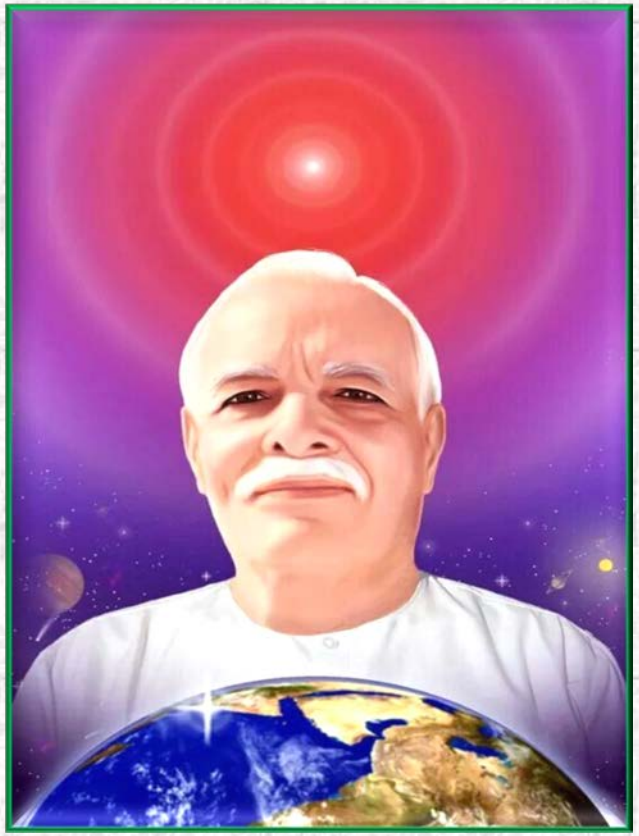

धन्यवाद